कक्षा XI - XII

भोजपुरी व्याकरण आ रचना

दिशा बोध

श्री हसन वारिस, निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), समिति पटना,बिहार विद्यालय परीक्षा
डॉ॰ कासिम खुरशीद, विभागाध्यक्ष (प्रभारी), भाषा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी. बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोइन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक **शिक्षा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी.** बिहार

भोजपुरी पाठ्य पुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष - **डॉ. गुलाबचन्द्र प्रसाद अभय,** पूर्व निदेशक, **बिहार भोजपुरी** अकादमी, पटना
समन्वयक - **डॉ. सुरेन्द्र कुमार,** व्याख्याता, भाषा विभाग, **राज्य शिक्षा शोध** एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना-800006

सदस्य

1. **डॉ. जयकान्त सिंह,** व्याख्याता सह अध्यक्ष, भोजपुरी **विभाग, लंगट सिंह** कॉलेज, मुजफ्फरपुर
2. **डॉ. शिवचन्द्र सिंह,** व्याख्याता, हिन्दी विभाग, आर.पी.एम. **कॉलेज,** पटना सिटी

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) पटना द्वारा आयोजित समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

1. **श्री सूर्यदेव प्रसाद साह,** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राम विलास गंगा राम कॉलेज, महाराजगंज, सीवान
2. **डॉ॰ गोवर्द्धन सिंह,** अध्यक्ष, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा

अकादमिक सहयोग

1. **श्री इम्तियाज आलम**, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस.सी.इ. आर.टी., बिहार, पटना-800006
2. **श्री ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी,** राज्य साधन सेवी, बी.ई.पी., पटना
3. **श्रीमती बेबी कुमारी**, शिक्षिका राजकीय बालिका उच्च विद्यालय महुआबाग, पटना
4. **डॉ. ज्ञान्ति कुमारी,** शिक्षा संकाय राँची विश्वविद्यालय राँची
5. **श्री देवेन्द्र प्रसाद**, प्रधानाध्यापक, उच्च विद्यालय परसा (सारण)

प्रस्तावना

भोजपुरी हिन्दी भाषा के बिहारी वर्ग के एगो प्रभावशाली भाषा ह। एह उपभाषा वर्ग में मैथिली, मगही, अंगिका आ बज्जिका के स्थान बा, जवन बिहार के कुछ क्षेत्र विशेष में मातृभाषा के रूप में बोलल, समझल जाला। एह में से मैथिली उपभाषा के साहित्यिक रूप के कुछ अधिका विकास भइल, कारण ई रहे कि मैथिलीभाषी एकजुट होके आवाज उठावे में ज्यादा समर्थ बा आ प्राथमिक कक्षा से स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ाई त होते बा, संविधान के अष्टम सूची में शामिल बा आ साहित्य अकादमी से ओकर मान्यता मिल चुकल बा। एह दिसाईं मैथिली भाषा सब तरह से विकसित हो चुकल बा।

बिहारी हिन्दी के उपभाषा आज से दू-तीन दशक पहिले भोजपुरिये एगो बोलिये रहे, हालाँकि भोजपुरी बोले बाला लोगन के संख्या ना बिहार भा भारते में अधिक बा, बलुक विदेश के बहुत देशन में करोड़ों के संख्या में भोजपुरी बोलल जाला। ई दू-तीन दशकन में भोजपुरी खाली बोलिये ना रह गइल, बलुक एगो भाषा के रूप ले लिहलस। साहित्य के हर विधा में विपुल साहित्य के रचना हो रहल बा। आज ई स्थिति बा कि एकर साहित्य भंडार काफी भर चुकल बा आ ई बिहार भा बिहार के बाहर के कवनो क्षेत्रीय भाषा से कम नइखे। फिल्म जगत त एह भाषा के विकास में काफी सहयोग कर रहल बा आ कुछ लोग जे भोजपुरीभाषी नइखे, उहो भोजपुरी सीख रहल बा। विदेश के देशन में मारीशस, फीजी, सूरिनाम, त्रिनिदाद आ अउरियो जगह भोजपुरी भाषा के बोलनिहार के संख्या करोड़न में बा।

भोजपुरी व्याकरण आ रचना

कक्षा XI आ XII खातिर

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत .

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 30.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा टेक्स्टबुक प्रेस, पटना-800001 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोम (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर 5,000 प्रतियाँ 20.5 × 14 सेमी. साईज में मुद्रित ।

रूप में ले आइल अभी संभव नइखे। बिहारे में भोजपुरी कई रूप में बोलल जाला–कहीं बा त कहीं बड़वें, कहीं बटे त कहीं बाटे। बिहार का बाहर के भोजपुरी के रूप त अउरियों अलग बा। एह सब के समेट के एक रूप में ले आइल तत्काल संभव नइखे।

इहाँ ई सवाल उठावल जा सकत बा कि तब भोजपुरी में व्याकरण के जरूरते का बा। जरूरत बा, जवन आगे चलकर हिन्दीए खानी एगो सर्वसम्मत मानक रूप धरी, काहे कि पाठ्यक्रम के भइला के रूप में मान्यता खातिर ई जरूरी होई।

प्रस्तुत व्याकरण में व्याकरण के प्रायः सब अंग के लिहल गइल बा आ अलग–अलग ढंग से प्रस्तुत कइल गइल बा, जवन पाठ्यक्रम का भाषा भइला का नाते रउरा खातिर उपयोगी सिद्ध होई। क्षेत्रीयता के आधार पर भोजपुरी के जो स्वरूप बा, ओह में केनियो से कवनों छेड़–छाड़ नइखे कइल गइल। बदलत समय में ई अपने–आप ठीक हो जाई।

एह व्याकरण में ध्वनि, ध्वनि से बनल शब्द, शब्द से बनल कई गो रूप–क्रिया, काल, वचन, लिंग, अव्यय, वाक्य, ओकर भेद, समास, छंद आ अलंकार के बिल्कुल स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करे के कोशिश कइल बा। ई बात साँच बा कि हिन्दी में अधिकांश संस्कृत शब्दन के प्रयोग कइल गइल बा आ दोसर क्षेत्रीय भाषा में लगभग हिन्दीए के तर्ज पर व्याकरण के रचना भइल बा, तबहूँ भोजपुरी के कुछ आपन ठेठ शब्द बाड़े सँ, जवन आओरियो भाषा में दुर्लभ बा। एह व्याकरण के पुस्तक में ओहू पर विचार कइल गइल बा।

एकरा रचना भाग में हर प्रकार के पत्र लेखन के विषय में बतावले गइल बा। विद्यार्थी लोगन के जानकारी खातिर पटकथा लेखन, रिपोर्ताज, फीचर-लेखन, रेडियोवार्ता, आदि के विषय में जानकारी दिहल गइल बा, जवना से भोजपुरी भाषा के विद्यार्थी लाभ उठाइहन। अगर कवनो तरह के कसर रह गइल होखे त अगला संस्करण में सुधार कइल जा सकेला।

अध्यक्ष	समन्वयक
डॉ॰ गुलाब चन्द्र प्रसाद अभय	डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार

विषय सूची

प्राक्कथन	iii
प्रस्तावना	vi - vii
कथनी	viii - x

व्याकरण खण्ड

अध्याय		पृष्ठ संख्या
अध्याय–1	वर्ण विचार	1
अध्याय–2	शब्द विचार	17
अध्याय–3	संज्ञा	45
अध्याय–4	सर्वनाम	52
अध्याय–5	वाक्य विचार	96
अध्याय–6	विशेषण	65
अध्याय–7	कारक	72
अध्याय–8	अव्यय	79
अध्याय–9	क्रिया	82
अध्याय–10	काल	94
अध्याय–11	वचन	102
अध्याय–12	लिंग	105

अध्याय-13 वाच्य 111

अध्याय-14 समास 115

अध्याय-15 अलंकार 122

अध्याय-16 छंद 141

रचना खण्ड

अध्याय-17 पत्रलेखन 156

अध्याय-18 संक्षेपण 174

अध्याय-19 पल्लवन 182

अध्याय-20 लेखन के विविध आयाम 189

अध्याय-21 भोजपुरी के मुहावरा 207